ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):407-422

जनपद कन्नौज में जनसंख्या वृद्धि एवं उसका स्वरूपः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

संजय कुमार भारती* **एवं भूपेन्द्र सिंह****

भूगोल विभाग,नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
कोटवा, जमुनीपुर दुबावल, प्रयागराज
*sanjaybhugeo@gmail.com, **sbhoopendra456@gmail.com

Received: 30.07.2025 *Revised: 23.12.2025* *Accepted: 26.12.2025*

सारांश

जनसंख्या वृद्धि सम्पूर्ण विश्व की आधारभूत समस्या हैं जिसने मानव जीवन में जटिलताओं का अम्बार लगा दिया है। वर्षो से परम्परागत मूल्यों एवं संसाधनों पर लगातार बढ़ते दबाव के वजह से मनुष्य खुद को उत्तरोत्तर निरीह महसूस कर रहा है। तीव्र जनसंख्या वृद्धि ने मनुष्य के दावे खोखला साबित कर दिया है। दूरदर्शिता विहीन आधुनिकीकरण का हाल यह हैं कि निर्धन, असहाय व लाचार जनसमूह निरन्तर नगरीयकरण व औद्योगीकरण से प्रभावित होकर रोजगार की तलाश में शहरों की ओर आकर्षित हो रहा है। जनसंख्या वृद्धि किसी क्षेत्र की जनसांख्यिकीय गतिशीलता का केन्द्र है। यह जनसंख्या का वह तत्व हैं जिससे जनसंख्या के अन्य सभी तत्व गहन रूप से सम्बद्ध हैं और इसी तत्व से ही अन्य लक्षणों का अर्थ और महत्व है। इसीलिए क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि को समझना उस क्षेत्र की सम्पूर्ण जनसंख्या संरचना को समझने की कुँजी है। जनसंख्या वृद्धि किसी स्थान विशेष में एक निश्चित अवधि में निवास करने वाले लोगों की संख्या में परिवर्तन को कहते है चाहे वह परिवर्तन धनात्मक हो या ऋणात्मक (चान्दना, 2006) यदि यह परिवर्तन धनात्मक वृद्धि में हो तो धनात्मक तथा ह्रास में हो तो ऋणात्मक वृद्धि कहते है। प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद कन्नौज के जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्दः *जनसांख्यिकीय गतिशीलता, जनसंख्या स्वरूप, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात।*

भूमिकाः

भूगोल में जनसंख्या के अध्ययन में सन् 1953 का मुख्य स्थान है। इस वर्ष ग्लैन ट्रिवार्था ने अपने अमरीकी भूगोल परिषद् के अध्यक्षीय भाषण में जनसंख्या भूगोल को क्रमबद्ध भूगोल

की एक शाखा के रूप में विस्तृत किया। इसके फलस्वरूप भूगोलवेत्ताओं को मनुष्य का अध्ययन करने की प्रेरणा मिली। तब से जनसंख्या भूगोल ने केवल एक अलग शाखा के रूप में उभरा अपितु इसमें शोध का स्तर भी ऊँचा उठा।

फ्रिन्च और ट्रिवार्था ने अपनी पुस्तक के पहले संस्करण मे भूगोल के अध्ययन क्षेत्र को बतलाते हुए जनसंख्या को सांस्कृतिक तत्वों मे सम्मिलित कर लिया था परन्तु इस पुस्तक के संशोधित नये संस्करण मे जनसंख्या को सांस्कृतिक तत्वों से निकालकर स्वतन्त्र स्थान दिया था। मानव भूगोलवेत्ताओं ने सर्वप्रथम धरातल के विभिन्न भागों मे जनसंख्या वितरण का अध्ययन किया। तदनन्तर इसमें आर्थिक, सामाजिक अधिवासीय यातायात सम्बन्धी व राजनीतिक इकाइयों के अध्ययन मे इसका क्षेत्र विस्तृत हो गया। फलस्वरुप भूगोल मे मानव को स्वीकार कर एक स्वतन्त्र एवं गत्यात्मक कारक के रुप मे इसका सतत अध्ययन होता रहा है। ट्रिवार्था (1969, पृ0 87) के अनुसार जनसंख्या भूगोल का प्रमुख उद्देश्य पृथ्वी पर जनसंख्या के वितरण में प्रादेशिक अन्तरों को समझाना है।

जी0 टी0 ट्रिवार्था (1953) "अमेरिकी भूगोल परिषद के अध्यक्षीय भाषण में जनसंख्या का स्वतंत्र अध्ययन करने के लिए भूगोल के एक उपविभाग के रूप में जनंसख्या भूगोल" के विकास पर बल दिया तथा इसके अध्ययन हेतु एक रूप रेखा प्रस्तुत की। अंग्रेजी भाषी देशों में ट्रिवार्था (1953) द्वारा सर्वप्रथम अधिकारिक रूप से इस शब्द का प्रयोग किया तथा जेलन्स्किी (1954) के साथ इनका *"अफ्रीका के जनसंख्या प्रतिरूप"* पर एक प्रपत्र छपा। जनसंख्या संबन्धी तथ्यों को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने का श्रेय जान ग्रान्ट (1962) को है। ग्रान्ट के समकालीन विलियम पेल्टी ने प्रवजन, प्रजनन, मृतकता जैसे कारकों पर प्रकाश डाला है। परन्तु जनसंख्या अध्ययन को एक वैज्ञानिक विषय के रूप में मान्यता तब प्राप्त हुई जब थामस राबर्ट माल्थस (1766) ने जनसंख्या सम्बन्धी विविध प्रमेयों को प्रस्तुत किया जिसके शीर्षक *"एन एसे आन दी प्रिन्सिपुल्स ऑफ पापुलेशन एण्ड इट एफेक्ट्स दी फ्यूचर इम्प्रूमेन्ट ऑफ सोसाइटी"* जिसमें जनवृद्धि को नियन्त्रित करने के नैतिक संयम पर बल दिया गया है।

जनसंख्या का गुणात्मक और मात्रात्मक अध्ययन इसलिए किया जाता है क्योंकि किसी क्षेत्र की वर्तमान और भविष्य की जरूरतों का आकलन करना आवश्यक है। तेजी से नगरीकरण के कारण हुए नगरीय विस्तार ने योजना और नीति निर्माण के लिए बड़ी चुनौतियां पेश की हैं, खासकर भारत जैसे विकासशील देशों में (रामचंद्रन, 2012)। मऊनाथ भंजन शहर के स्थानिक-कालिक संदर्भ में जनसंख्या वृद्धि, वितरण और घनत्व की विस्तार से चर्चा की गई है (भारती और शर्मा 2015)। शहरी विकास शहरों के साथ-साथ शहरी संस्कृति और मूल्यों के प्रभुत्व वाली दुनिया के उद्भव की प्रक्रिया है। वास्तव में, जनसंख्या वृद्धि को किसी निश्चित समयावधि में किसी क्षेत्र की जनसंख्या के आकार में परिवर्तन के रूप में माना जाता है (बार्कले 1958, बोग 1969)।

जनसंख्या वृद्धि चाहे सकारात्मक हो या नकारात्मक, उस क्षेत्र में मौजूद पर्यावरणीय संभावनाओं के प्रति मनुष्य की प्रतिक्रिया के इतिहास को दर्शाती है (शर्मा 1978)। विनय सिंह (2012) ने उत्तर प्रदेश में साक्षरता का स्थानिक प्रतिरूप पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। रमा शंकर (2016) ने अपने शोध प्रबंध में जनपद इलाहाबाद (उ0प्र0) में भूमि उपयोग एवं जनसंख्या के मध्य अन्तर्सम्बन्धों को बताया है। भारती एवं यादव (2023) ने अपने शोधपत्र, 'आजमगढ़ शहर में जनसंख्या की वृद्धि और स्थानिक वितरण का विश्लेषण' में बल दिया है और पटेल एवं भारती (2023) ने भी अपने शोधपत्र 'बांदा शहर की जनसंख्या वृद्धि और उसकी विशेषताएं: एक भौगोलिक अध्ययन' में शहरी इतिहास में शोध की आवश्यकता पर बल दिया है जो शहर की जनसंख्या वृद्धि और वितरण की जांच करता है। जौनपुर शहर में जनसंख्या वृद्धि और प्रक्षेपित जनसंख्या की विशेसताओ का अध्ययन प्रस्तुत किया (यादव एवं भारती, 2024)। जनसंख्या की असंतुलित संरचना और संरचना स्थायी सामाजिक व्यवस्था में कई समस्याएं पैदा करती है और समय और स्थान में चल रही विकास प्रक्रियाओं को छुपाती है (गुप्ता और भारती, 2024)।

भारत का क्षेत्रफल विश्व के कुल क्षेत्रफल का मात्र 2.4 प्रतिशत है जहां विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। भारत की जनसंख्या में वर्ष 1911-1921 के दशक को छोड़ दिया जाय तो जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि देखी गई है। वर्ष 1961-1971 के दशक में सर्वाधिक दशकीय वृद्धि 24.80 प्रतिशत हुई थी। वही उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक दशकीय वृद्धि 1991-2001 के दशक में 25.85 प्रतिशत और जनपद में सर्वाधिक दशकीय वृद्धि 1991-2001 के दशक में 29.70 प्रतिशत हुई थी।

उद्देश्य:

1- जनपद कन्नौज में जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन करना।
2- जनसंख्या के विभिन्न तत्वों (जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात एवं आयुवर्ग संरचना) का कालिक विश्लेषण करना।

आंकड़ा स्रोत एवं विधितंत्र:

इस अध्ययन में जनगणना वर्ष को मूल इकाई माना गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में आंकड़ों एवं सूचनाओं के संग्रहण के लिए जिला सांख्यिकीय पत्रिका से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। जनगणना वर्ष का द्वितीयक आंकड़ों को विश्लेषण करने के उपरांत में सारणी एवं दंड आरेख का निर्माण किया गया है। जनपद का आधार मैप बनाने के लिए आर्क जी0आई0एस0 10.4 सॉफ्टवेयर द्वारा निर्मित भू-पत्रक संख्या- 54M/8, 54M/12, 54M/16, 54N/5, 54N/9, 54N/13 एवं जिला जनगणना पुस्तिका और जनपद सांख्यिकीय पत्रिका वर्ष 2020 के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। जनगणना वर्ष 2011 के आकड़ों का प्रयोग कर शोधार्थी ने अभीष्ट निष्कर्षो तक पहुँचने का प्रयास किया है। इसके अलावा शोध ग्रंथों, शोध पत्रों तथा पत्र पत्रिकाओं से भी आंकड़े प्राप्त किये गये है (**मानचित्र संख्या-** 1)।

अध्ययन क्षेत्र::

भारतवर्ष में उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर मंडल में उत्तर पश्चिम के कोने में स्थित जनपद कन्नौज उदीयमान सेवा केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा है। यह जनपद $26^{0}46'08''$ से $27^{0}13'44''$ उत्तरी अक्षांश के मध्य तथा देशान्तरीय विस्तार $79^{0}18'56''$ से $80^{0}19'81''$ पूर्वी देशान्तर के मध्य विस्तृत है। जनपद की पूर्व से पश्चिम की अधिकतम लम्बाई 66.07 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण की अधिकतम चैड़ाई 47.86 किलोमीटर है। जनपद के उत्तरी एवं पूर्वी सीमा पर ही गंगा नदी प्रवाहित होती है। कन्नौज जनपद के उत्तर में फर्रूखाबाद (कुल सीमा रेखा 63.66 कि0मी0), उत्तर पूर्व में हरदोई (79.26 कि0मी0), पूर्व में कानपुर नगर (39.90 कि0मी0), दक्षिण पूर्व में कानपुर देहात (23.63 कि0मी0), दक्षिण में औरैया (68.93 कि0मी0), दक्षिण पश्चिम में इटावा (5.34 कि0मी0) तथा पश्चिम में मैनपुरी (46.18 कि0मी0) जनपद स्थित हैं। प्रशासनिक दृष्टि से कन्नौज जनपद कानपुर संभाग (कमिश्नरी) में आता है कन्नौज गंगा-यमुना दोआब में स्थित है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 1656616 व्यक्ति है।

जनसंख्या वृद्धि:

जनसंख्या वृद्धि किसी क्षेत्र की जनसांख्यिकीय गतिशीलता का केन्द्र है। यह जनसंख्या का वह तत्व है जिससे अन्य सभी तत्व गहन रूप से सम्बद्ध हैं और इसी तत्व से ही अन्य लक्षणों का अर्थ और महत्व हैं। जनसंख्या वृद्धि किसी स्थान विशेष में एक निश्चित अवधि में निवास करने वाले लोगों की संख्या में परिवर्तन को कहते हैं चाहे वह परिवर्तन धनात्मक हो या ऋणात्मक। भारत जैसे विकासशील देश के लिए तीव्र जनसंख्या वृद्धि एक अभिशाप के रूप में सिद्ध हुई हैं जिसने भारत की प्रगति को तो निगला ही है साथ ही अनेक समस्याओं (गरीबी, बेरोजगारी, बेकारी, कुपोषण, पर्यावरणीय, आर्थिक) को भी जन्म दिया है। इसलिए भारत में जनसंख्या के क्षेत्रवार अध्ययन व नियोजन पर बल दिये जाने की आवश्यकता है।

1. जनसंख्या वृद्धि का ह्रास काल (1901-1921):

इस काल में भारत की जनसंख्या 1901 में 23.6 करोड़ से बढ़कर 1921 में 24.8 करोड़ हो गयी थी। इस अवधि में मृत्यु दर बहुत ही अधिक (40 प्रति हजार) थी। इस अवधि में उत्तर प्रदेश तथा देश की जनसंख्या में भी ऋणात्मक वृद्धि हुई। जनसंख्या दर में आयी इस कमी का मुख्य कारण महामारी, दुर्भिक्ष एवं खाद्य पदार्थो का अभाव एवं प्लेग तथा मलेरिया के प्रकोप प्रमुख उत्तरदायी कारक थे। वर्ष 1901 की जनगणना के अनुसार जनपद कन्नौज की जनसंख्या 908143 व्यक्ति (जनसंख्या हजार में) थी जो घटकर 1911 में 882965 व्यक्ति (जनसंख्या हजार में) रह गयी। वर्ष 1921 में भी जनसंख्या 5.06 प्रतिशत की ऋणात्मक वृद्धि हुई। इस प्रकार वर्ष 1901 से 1921 के मध्य दो दशकों में जनपद की जनसंख्या में -5.06 प्रतिशत की कमी आयी।

2. जनसंख्या का मन्द वृद्धि काल (1921-1951)

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि 1930 के दशक से भारत की जनसंख्या में मन्द गति से वृद्धि आरम्भ होती है। वर्ष 1921 भारतीय जनसंख्या विकास में एक महान विभाजक माना जाता है क्योंकि इसके पहले जनसंख्या स्थिर थी। यहीं से जनसंख्या में एक नया मोड़ आता है और जनसंख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इन तीस वर्षो में कन्नौज की जनसंख्या 840410 व्यक्ति (जनसंख्या हजार में) से बढ़कर 1092563 व्यक्ति (जनसंख्या हजार में) हो गयी।

3. जनसंख्या का तीव्र वृद्धि काल (1951 से अब तक)

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत बहुमुखी विकास कार्यक्रम संचालित किये जाने लगे जिससे भारत में कृषि, उद्योग, व्यापार, परिवहन आदि आर्थिक क्षेत्रों में तेजी से प्रगति आरम्भ हुई। साक्षरता में क्रमिक वृद्धि के साथ ही चिकित्सा तथा स्वस्थ्य सुविधाओं में पर्याप्त विस्तार हुआ जिससे महामारियों पर लगभग नियंत्रण पा लिया गया। इससे जनसंख्या पर अनुकूल प्रभाव हुआ और मृत्युदर निरंतर तथा तीव्र गति से कम होती गयी। 1951 की जनगणना के अनुसार कन्नौज की कुल जनसंख्या 1092563 व्यक्ति (जनसंख्या हजार में) थी जो बढ़कर 1981 में 1949137 व्यक्ति (जनसंख्या हजार में) तथा 1991 में घटकर 1155847 व्यक्ति (जनसंख्या हजार में) और 2011 में बढ़कर 1658005 व्यक्ति (जनसंख्या हजार में) हो गयी। छठवें, सातवें, आठवें, नौवे, दशवें व ग्यारहवें दशकों में जनसंख्या वृद्धि दर क्रमशः 15.64, 16.82, 20.12, 20.13, -75.69 एवं 16.16 प्रतिशत हो गयी।

सम्पूर्ण कालावधि (1901-2011) के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 1921 तक पिछड़े सामाजिक आर्थिक परिवेश अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधा, अशिक्षा आदि के कारण जन्मदर और मृत्युदर दोनों ही उच्च रही और जनसंख्या में 1997 में जनपद का विभाजन हो के कारण वर्ष 2001 में जनसंख्या में ऋणात्मक परिवर्तन हुए परन्तु वर्ष 2011 के बाद आर्थिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक परिवर्तन, स्वस्थ्य सुविधाओं के प्रसार से जन्म और मृत्युदर दोनों में गुणात्मक सुधार हुआ साथ ही लोक जीवन तथा जनस्वस्थ्य में भी गुणात्मक परिवर्तन हुआ उपरोक्त कारणों से जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई। तीव्र वृद्धि होने से जनसंख्या निर्भरता अनुपात तथा प्रजनन जनसंख्या अनुपात में वृद्धि हुई हैं।

तालिका- 1

जनसंख्या वृद्धि (1901-2011)

वर्ष	कुल जनसंख्या	वृद्धि दर	वृद्धि दर (प्रतिशत में)
1901	908143	0	0
1911	882965	-25178	-2.85
1921	840410	-42555	-5.06
1931	878205	37795	4.30
1941	955505	77300	8.09
1951	1092563	137058	12.54
1961	1295071	202508	15.64
1971	1556930	261859	16.82
1981	1949137	392207	20.12
1991	2440266	491129	20.13
2001	1388923	-1051343	-75.69
2011	1656616	267693	16.16

स्रोतः जनगणना सी0डी0, 2011

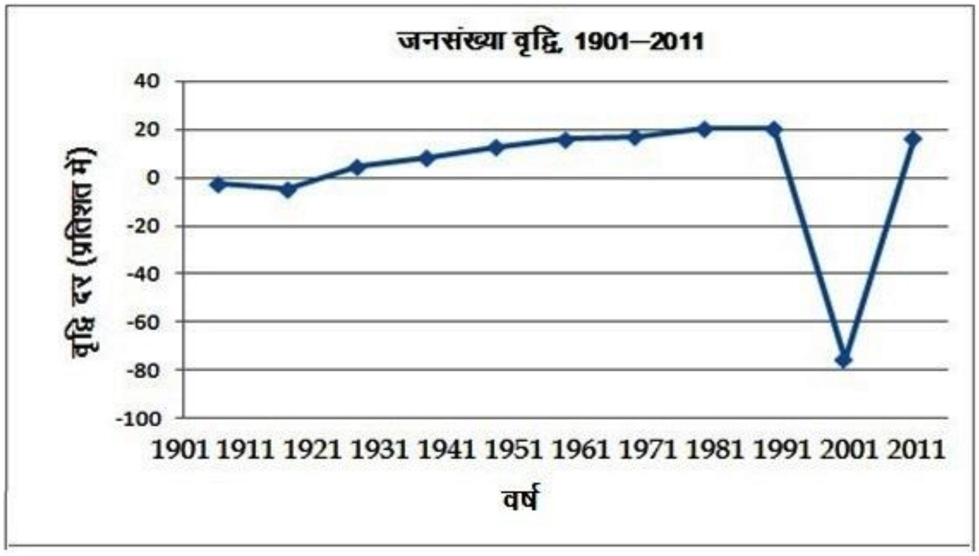

स्रोतः जनगणना सी0डी0, 2011

चित्र सं0- 1

उपरोक्त चित्र 1 से स्पष्ट है कि वर्ष 1901 एवं 1911 को छोड़ दिया जाय तो जनसंख्या में सामान्यतः वृद्धि ही पायी गई लेकिन वर्ष 2001 में में जनसंख्या में ऋणात्मक परिवर्तन हुए जिसका मुख्य कारण वर्ष 1997 से पूर्व कन्नौज फर्रुखाबाद जनपद की एक तहसील के रूप में था। दिनांक 18.09.1997 को उत्तर प्रदेश शासन ने तहसील कन्नौज को फर्रुखाबाद जनपद से पृथक कर स्वतन्त्र जनपद के रूप में मान्यता प्रदान की।

जनसंख्या घनत्व

भूमि और जनसंख्या के सही सम्बन्धों को जानने के लिए क्षेत्रफल और जनसंख्या के अनुपात का ज्ञान आवश्यक होता है। इस प्रकार जनसंख्या का घनत्व भूमि पर जनसंख्या के दबाव को प्रदर्शित करता है। यह वायुमंडल में वायुदाब की माप करने वाले बैरोमीटर के समान है जो भूमि के प्रति इकाई क्षेत्रफल पर जन दाब (Population Pressure) को व्यक्त करता है।

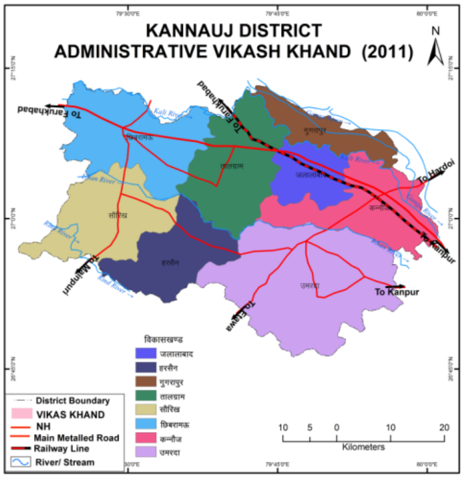
KANNAUJ DISTRICT
ADMINISTRATIVE VIKASH KHAND (2011)
N
To Farukhabad
To Farukhabad
To Hardoi
To Kanpur
To Kanpur
To Etawa
To Mainpuri
Kali River
Ganga River
Isan River
Rind River
छिबरामऊ
तालग्राम
गुगरापुर
जलालाबाद
कन्नौज
सौरिख
हसीन
उमरदा
विकासखण्ड
जलालाबाद
हसीन
गुगरापुर
तालग्राम
सौरिख
छिबरामऊ
कन्नौज
उमरदा
District Boundary
VIKAS KHAND
NH
Main Metalled Road
Railway Line
River/ Stream
10 5 0 10 20
Kilometers

मानचित्र संख्या - 1

स्रोतः आर्क जी. आई. एस. 10.4 सॉफ्टवेयर द्वारा निर्मित भू-पत्रक संख्या- 54M/8, 54M/12. 54M/16, 54N/5, 54N/9, 54N/13 एवं जिला जनगणना पुस्तिका (2011) आंकडा़ पर आधारित।

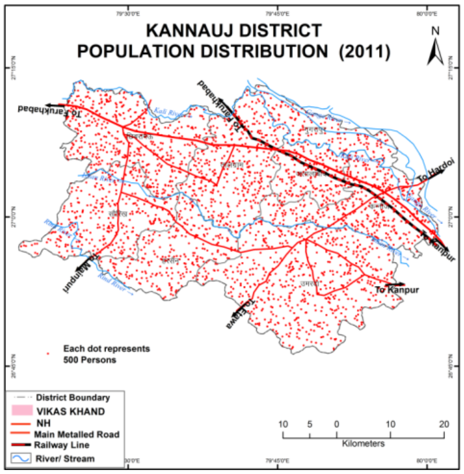
KANNAUJ DISTRICT
POPULATION DISTRIBUTION (2011)
N
To Farukhabad
To Farukhabad
To Hardoi
To Kanpur
To Kanpur
To Etawa
To Mainpuri
Each dot represents
500 Persons
District Boundary
VIKAS KHAND
NH
Main Metalled Road
Railway Line
River/ Stream
10 5 0 10 20
Kilometers

मानचित्र संख्या- 2

स्रोतः आर्क जी. आई. एस. 10.4 सॉफ्टवेयर द्वारा निर्मित भू-पत्रक संख्या- 54M/8, 54M/12. 54M/16, 54N/5, 54N/9, 54N/13 एवं जिला जनगणना पुस्तिका (2011) और जनपद सांख्यिकीय पत्रिका वर्ष 2019, आंकडा़ पर आधारित।

किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व एक निश्चित भू-भाग पर क्षेत्र एवं जनसंख्या के मध्य अनुपात को प्रदर्शित करता है। अतः जनसंख्या का घनत्व एक ऐसा मापदण्ड है जो भूमि पर जनसंख्या के भार को स्पष्ट करता है। साथ ही क्षेत्र विशेष में जनसंख्या एवं खाद्य संसाधनों के

मध्य परिवर्तनशील सम्बन्धों को भी स्पष्ट करता है। इस प्रकार जनसंख्या का प्रति वर्ग किलोमीटर समान एवं असमान वितरण मानवीय संस्कृति की उन्नति एवं अवनति का प्रतीक है जो स्थान विशेष की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति की योजना निर्धारित करने के लिये उस स्थान की जनसंख्या की सघनता तथा विरलता का बोध कराता है।

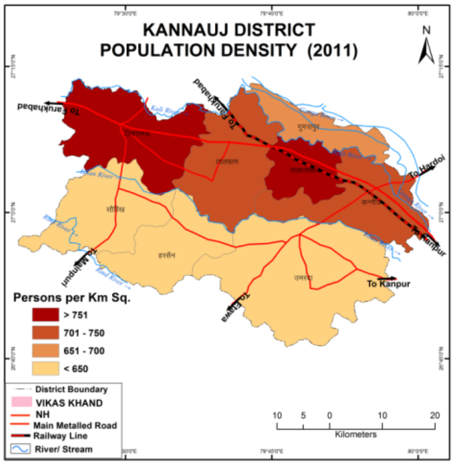
KANNAUJ DISTRICT
POPULATION DENSITY (2011)
N
To Farukhabad
To Hardoi
To Kanpur
To Mainpuri
To Etawa
Kali River
Ganga River
Isan River
Rind River
गुगरापुर
छिबरामऊ
तालग्राम
जलालाबाद
कन्नौज
सौरिख
उमरदा
Persons per Km Sq.
> 751
701 - 750
651 - 700
< 650
District Boundary
VIKAS KHAND
NH
Main Metalled Road
Railway Line
River/ Stream
10 5 0 10 20
Kilometers

मानचित्र संख्या - 3

स्रोतः आर्क जी. आई. एस. 10.4 सॉफ्टवेयर द्वारा निर्मित भू-पत्रक संख्या- 54M/8, 54M/12. 54M/16, 54N/5, 54N/9, 54N/13 एवं जिला जनगणना पुस्तिका (2011) और जनपद सांख्यिकीय पत्रिका वर्ष 2019, आंकडा़ पर आधारित।

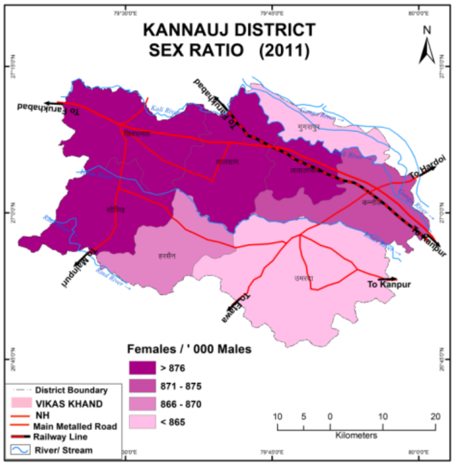
KANNAUJ DISTRICT
SEX RATIO (2011)
N
To Farukhabad
To Hardoi
To Kanpur
To Mainpuri
To Etawa
Kali River
Ganga River
Isan River
Rind River
गुगरापुर
छिबरामऊ
तालग्राम
जलालाबाद
कन्नौज
सौरिख
उमरदा
Females / ' 000 Males
> 876
871 - 875
866 - 870
< 865
District Boundary
VIKAS KHAND
NH
Main Metalled Road
Railway Line
River/ Stream
10 5 0 10 20
Kilometers

मानचित्र संख्या - 4

स्रोतः आर्क जी. आई. एस. 10.4 सॉफ्टवेयर द्वारा निर्मित भू-पत्रक संख्या- 54M/8, 54M/12. 54M/16, 54N/5, 54N/9, 54N/13 एवं जिला जनगणना पुस्तिका (2011) और जनपद सांख्यिकीय पत्रिका वर्ष 2019, आंकडा़ पर आधारित।

जनपद कन्नौज का कुल क्षेत्रफल 2058.51 वर्ग किलोमीटर है तथा जनपद का औसत 690 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। जनपद में विकासखण्डवार जनसंख्या घनत्व का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि विकासखण्ड जलालाबाद में जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक 881 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है तथा सबसे कम जनसंख्या घनत्व 568 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर उमरदा विकासखण्ड में है। द्वितीय स्थान पर छिबरामऊ विकासखण्ड जिसमें प्रतिवर्ग किलोमीटर पर 767 व्यक्ति निवास करते हैं। तृतीय स्थान पर कन्नौज विकासखण्ड का जनसंख्या घनत्व 745 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। तालग्राम विकासखण्ड का जनघनत्व 702 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है जो कि जनपद के विकासखण्डों में चतुर्थ स्थान पर है। पांचवे स्थान पर गुगरापुर विकासखण्ड में 669 व्यक्ति प्रतिवर्ग वर्ग किलोमीटर पर निवास करते है। छठवें व सातवें क्रम पर क्रमशः सौरिख

व हरसैन विकासखण्ड है। विस्तृत विवरण हेतु तालिका 2 दृष्टव्य है।

जनपद कन्नौज का कुल क्षेत्रफल 2058.51 वर्ग किलोमीटर है विकासखण्डवार क्षेत्रफल में सर्वाधिक उमरदा (510.84 वर्ग कि0मी0) तत्पश्चात् छिबरामऊ (299.97 वर्ग कि0मी0), तालग्राम (276.67 वर्ग कि0मी0), कन्नौज (275.72 वर्ग कि0मी0), सौरिख (266.39 वर्ग कि0मी0), हरसैन (209.04 वर्ग कि0मी0) जलालाबाद (116.33 वर्ग कि0मी0) व सबसे कम गुगरापुर (103.55 वर्ग कि0मी0) का है जो कि चित्र सं0 2 से स्पष्ट है।

तालिका 2

विकासखण्डवार जनसंख्या घनत्व, 2011

क्र0 सं0	**विकासखण्ड का नाम**	**कुल जनसंख्या**	**कुल क्षेत्रफल (वर्ग कि0मी0 में)**	**जनसंख्या घनत्व**
1	छिबरामऊ	230064	299.97	766.96
2	तालग्राम	194284	276.67	702.22
3	सौरिख	164971	266.39	619.28
4	हरसैन	119018	209.04	569.36
5	जलालाबाद	102516	116.33	881.25
6	कन्नौज	205380	275.72	744.89
7	उमरदा	290305	510.84	568.29
8	गुगरापुर	69237	103.55	668.63
योग		**1375775**	**2058.51**	**690.11**

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका एवं व्यक्तिगत परिकलन पर आधारित

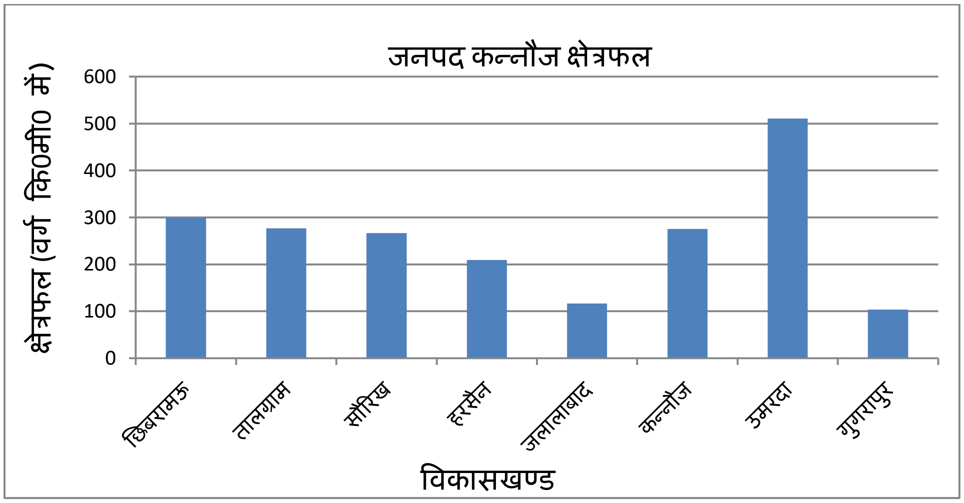

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका एवं व्यक्तिगत परिकलन पर आधारित

चित्र सं0- 2

स्त्री-पुरूष अनुपात

किसी भी देश या क्षेत्र की अर्थव्यवस्था एवं समाज के विकास में लिंगानुपात की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, जिसके फलस्वरूप जनसंख्या में इसका अध्ययन महत्वपूर्ण होता है। मानव संसाधन के मूल्यांकन में लिंगानुपात एक प्रमुख चर के रूप में कार्य करता है तथा श्रम शक्ति की आपूर्ति की मात्रा को भी निर्धारित करता है। ''लिंगानुपात किसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का सूचक है तथा प्रादेशिक विश्लेषण के लिए अत्यंत लाभदायक यंत्र है'' (फ्रैंकलिन, 1956)। लिंग अनुपात का प्रभाव अन्य जनसांख्यिकी तत्त्वों जैसे जनसंख्या वृद्धि, विवाह दर, व्यावसायिक संरचना पर भी माना गया है (श्रियाक, 1976)। ''किसी एक निश्चित जनसंख्या में पुरुष एवं स्त्री के अनुपात को लिंगानुपात कहते हैं'' (सन्त, 1969)। ''लिंगानुपात से दो सम्बन्धित समूह पुरुष तथा स्त्री का आकार स्पष्ट होता है'' (ब्रेक्ले, 1958)।

अतः लिंग अनुपात का ज्ञान रोजगार तथा उपभोग प्रारूप तथा किसी समुदाय की सामाजिक आवश्यकताओं को समझने के लिए आवश्यक है। ट्रिवार्था (1955) के अनुसार किसी भी क्षेत्र के भौगोलिक विश्लेषण के लिए दोनों लिंगो का अनुपात आधारभूत है क्योंकि यह न केवल स्थल रूप का एक महत्वपूर्ण लक्षण है, अपितु यह अन्य जनसांख्यिकी तत्त्वों को भी महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। इस प्रकार किसी क्षेत्र के भौगोलिक विश्लेषण के लिए लिंगानुपात एक आवश्यक तत्त्व है। विभिन्न देशों के जनगणना विभाग यौन-संरचना को एक दूसरे के समानुपातिक रूप में ही व्यक्त करते हैं फिर भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर इसके प्रदर्शन की कोई सर्वमान्य विधि नहीं है। सामान्यतः निम्न तीन रूपों में इस अनुपात का अध्ययन होता है-

(i) प्रति 100 या 1000 स्त्री/पुरुष पर पुरुष/स्त्रियों की संख्या।
(ii) स्त्री या पुरुष कुल जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में।
(iii) इकाई के दशमलव रूप में पुरुषों या स्त्रियों का अनुपात।

भारत में प्रथम विधि के अनुसार लिंगानुपात की गणना की जाती है।

$$\text{लिंगानुपात} = \frac{\text{स्त्री जनसंख्या}}{\text{पुरुष जनसंख्या}\ x1000}$$

तालिका 3

जनपद कन्नौज लिंगानुपात 1901-2011

जनगणना वर्ष	ग्रामीण
1901	838
1911	815
1921	822
1931	822
1941	865
1951	828
1961	840
1971	823
1981	829
1991	831
2001	861
2011	874

स्रोतः DCHB—2011, Part-A: Kannauj

तालिका 3 से स्पष्ट है कि जनपद कन्नौज में विभिन्न जनगणना वर्ष में स्त्री-पुरूष अनुपात में उतार चढ़ाव देखे को मिलता है परन्तु 1971 के बाद धीरे-धीरे ही सही सकारात्मक वृद्धि हो रही है।

जनपद में वर्ष 2011 में प्रति हजार पुरुषों के अनुपात में स्त्रियों की संख्या 874 थी जिसमें सर्वाधिक विकासखण्ड तालग्राम में प्रति हजार पुरुषों के अनुपात में स्त्रियों की संख्या 886 एवं सबसे कम विकासखण्ड गुगरापार में प्रति हजार पुरुषों के अनुपात में स्त्रियों की संख्या 863 है। अध्ययन क्षेत्र में शोधार्थी ने इनको तीन वर्गो में विभक्त किया है। जिसमें प्रति हजार पुरुषों के अनुपात में स्त्रियों की संख्या 880 से अधिक दो विकासखण्ड छिबरामऊ (881) एवं तालग्राम (886) है। एक हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या 871-880 वाले तीन विकासखण्ड है जो क्रमशः कन्नौज (872) सौरिख (876) जलालाबाद (877) तथा 870 से कम में तीन विकासखण्ड है जो क्रमशः गुगरापार (863), उमरदा (864) व हरसैन (866) है (तालिका 4)।

तालिका 4
विकासखण्डवार स्त्री-पुरूष अनुपात 2011

विकासखण्ड का नाम	कुल जनसंख्या	कुल पुरूष	कुल स्त्रियां	प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियां (लिंगानुपात)	पुरूष प्रतिशत	स्त्री प्रतिशत
छिबरामऊ	230064	122332	107732	881	53.17	46.83
तालग्राम	194284	103007	91277	886	53.02	46.98
सौरिख	164971	87938	77033	876	53.31	46.69
हरसैन	119018	63770	55248	866	53.58	46.42
जलालाबाद	102516	54603	47913	877	53.26	46.74
कन्नौज	205380	109695	95685	872	53.41	46.59
उमरदा	290305	155741	134564	864	53.65	46.35
गुगरापुर	69237	37159	32078	863	53.67	46.33
योग	**1375775**	**734245**	**641530**	**874**	**53.37**	**46.63**

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका एवं व्यक्तिगत परिकलन पर आधारित

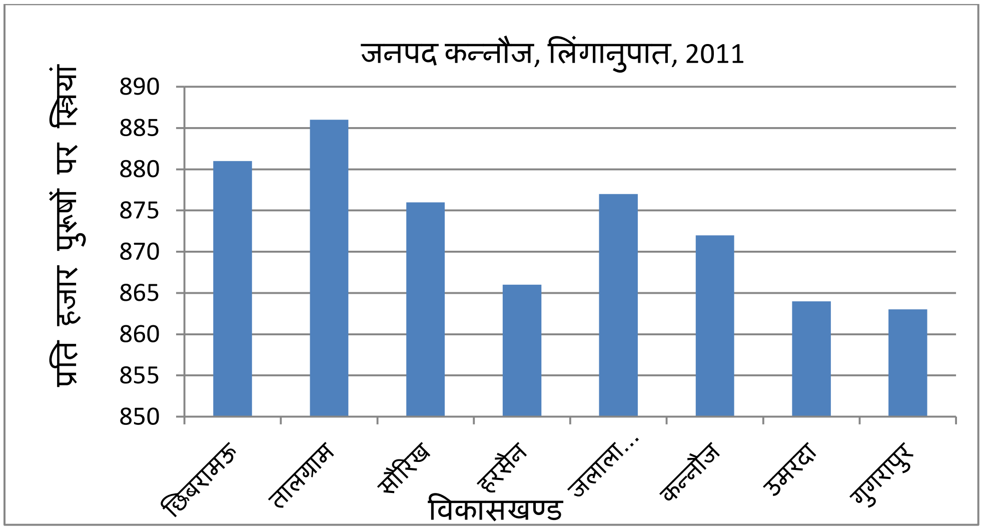

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका एवं व्यक्तिगत परिकलन पर आधारित

चित्र सं0- 3

जनपद का औसत लिंगानुपात 874 है वहीं उपरोक्त चित्र 3 से स्पष्ट है कि विकासखण्डवार सर्वाधिक लिंगानुपात तालग्राम (886) तत्पश्चात् छिबरामऊ (881) जलालाबाद (877) सौरिख (876) कन्नौज (872) हरसैन (866) उमरदा (864) तथा सबसे कम

गुगरापुर (863) में है (तालिका 4)।

आयुवर्ग संरचना

जनांकिकीय अध्ययन में आयु वर्ग संरचना एक महत्वपूर्ण पक्ष है। आयु संरचना का अध्ययन, सैनिक कार्य कलापों, शैक्षिक सुविधाओं तथा समाज कल्याण कार्यक्रमों के नियोजन तथा क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। किसी जनसंख्या की आयु संरचना सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं जैसे सामाजिक तथा राजनैतिक प्रवृत्तियों, आर्थिक क्रिया-कलापों, शारीरिक क्षमता आदि को प्रभावित करती है। मनुष्य की आयु उसकी आवश्यकताओं, कार्य क्षमता तथा विचारों को प्रभावित करती है। अतः आयु मनुष्य की क्षमता सूचक है (चान्दना-1981, पृ0 126)। इससे यह पता चलता है कि जनसंख्या का कौन सा भाग ऐसा है जो भविष्य में पुनरोत्पादन की प्रक्रिया में भाग लेगा तथा कितना भाग ऐसा है जो पुनरोत्पादन तथा जनसंख्या वृद्धि में अपना योगदान कर रहा है।

जनपद में जनसंख्या का क्रियाशील वर्ग (15-59 वर्ष) के अन्तर्गत आता है। 60 वर्ष से उपर वाली जनसंख्या वह है जिसके अन्तर्गत वृद्ध एवं सेवानिवृत्त लोग आते है, जिनके कार्य करने की क्षमता कम होती है। जनसंख्या की इस आयु संरचना से यह स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में आने वाले दशकों में लगातार वृद्धि होती है तथा कार्यशील जनसंख्या का वर्चस्व बना रहेगा। इस प्रकार आयु संरचना, सम्भाव्य श्रम-आपूर्ति और क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि के प्रवृत्त का एक सूचकांक है (तिवारी-2013, पृ045)। किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या का वास्तविक चित्र तब तक स्पष्ट नहीं होता जब तक कि उसका आयु के आधार पर वर्गीकरण न किया गया हो वस्तुतः आयु-संरचना जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने के साथ सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं को भी प्रभावित करती है। इसके विश्लेषण से भावी जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों का भी आकलन किया जा सकता है।

किसी भी स्थान की किसी विशेष समय की आयु संरचना उन सभी कारकों के प्रभावों का निष्कर्ष होती है जो जन्मदर, मृत्यु दर तथा प्रवास अथवा अप्रवास को प्रभावित करते हैं। आयु संरचना के अध्ययन में व्यक्तियों को निम्न आयु वर्गो में बांटा गया है –

1. 0-14 वर्ष तक बाल्यावस्था
2. 15-24 वर्ष किशोरावस्था/युवावस्था का प्रारम्भ
3. 25-59 वर्ष युवावस्था/प्रौढ़ावस्था
4. 60 वर्ष से अधिक वृद्धावस्था

तालिका 5

आयु समुह, 2011

आयु समुह	कुल जनसंख्या	पुरूष	स्त्री	प्रतिशत
0-14 वर्ष	599393	316885	282508	38.59
15-24 वर्ष	352245	195491	156754	22.68
25-59 वर्ष	573665	302116	271549	36.93
60 वर्ष से अधिक	27961	14441	13520	1.80

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका एवं व्यक्तिगत परिकलन पर आधारित

सम्पूर्ण कन्नौज जनपद में 0 से 14 वर्ष आयु समूह का 38.59 प्रतिशत है तथा 15 से 24 वर्ष आयु समूह का 22.68 प्रतिशत है। और ये दोनों वर्ग आश्रित वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। तृतीय वर्ग 25 से 59 वर्ग आयु समूह का 36.93 प्रतिशत है। यह वर्ग कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत आता हैं तथा 60 से अधिक आयु वर्ग का 1.80 प्रतिशत है जो पूर्णतः आश्रित वर्ग है। विस्तृत विवरण हेतु तालिका क्रमांक 5 दृष्टव्य है।

निष्कर्ष

सम्पूर्ण कालावधि (1901-2011) के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 1921 तक पिछड़े सामाजिक आर्थिक परिवेश अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधा, अशिक्षा आदि के कारण जन्मदर और मृत्युदर दोनों ही उच्च रही और जनसंख्या में 1997 में जनपद का विभाजन हो के कारण वर्ष 2001 में जनसंख्या में ऋणात्मक परिवर्तन हुए परन्तु वर्ष 2011 के बाद आर्थिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक परिवर्तन, स्वस्थ्य सुविधाओं के प्रसार से जन्म और मृत्युदर दोनों में गुणात्मक सुधार हुआ साथ ही लोक जीवन तथा जनस्वस्थ्य में भी गुणात्मक परिवर्तन हुआ उपरोक्त कारणों से जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई। तीव्र वृद्धि होने से जनसंख्या निर्भरता अनुपात तथा प्रजनन जनसंख्या अनुपात में वृद्धि हुई हैं। जनपद का कुल क्षेत्रफल 2058.51 वर्ग किलोमीटर है तथा औसत जनसंख्या घनत्व 690 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। जहां विकासखण्डवार जलालाबाद में सर्वाधिक 881 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर तथा सबसे कम जनसंख्या घनत्व उमरदा 568 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर विकासखण्ड में है। जनपद में वर्ष 2011 में लिंगानुपात प्रति हजार पुरुषों के तुलना में स्त्रियों की संख्या 874 थी जिसमें सर्वाधिक विकासखण्ड तालग्राम में 886 एवं सबसे कम विकासखण्ड गुगरापार में प्रति हजार पुरुषों के अनुपात में स्त्रियों की संख्या 863 है। जनपद कन्नौज में विभिन्न जनगणना वर्ष में स्त्री-पुरूष अनुपात में उतार चढ़ाव देखे को मिलता है परन्तु 1971 के बाद धीरे-धीरे ही सही सकारात्मक वृद्धि हो रही है।

संदर्भ सूचीः

1. Barclay, G.W. (1958), *'Technique of Population Analysis',* New York: John Willey& Sons, Inc.
2. Bharati, S. K. & Sharma, P.R. (2015), 'An Analysis of Growth and Spatial Distribution of Population in Maunath Bhanjan City', *The Geographer,* Vol-62, No.1, pp. 34-44.
3. Bharati, S. K. & Yadav, R. L. (2023), 'An Analysis of Growth and Spatial Distribution of Population in Azamgarh City' Published in the Multidisciplinary Research Journal of *'NAMAN'* (ISSN: 2229-5585), Vol-28, January, 2023, pp. 303-316. *(With GIF 3.125)* (UGC CARE listed S.No. 28). Publisher: Shri Mohit Nigam Printek, Indian Press Colloney, Maldahiya, Varanasi.
4. Bogue, D. J. (1969), '*Principles of Demography'*, New York: John Wiley & Sons, Inc., p. 32.
5. Census of India. (1872-2011), *Primary Census Abstract.* Directorate of Census Operations, Uttar Pradesh, Lucknow.
6. Census of India. (2001, 2011), *District Census Handbook.* Directorate of Census Operations, Uttar Pradesh, Lucknow.
7. Chandana. R. C. (1980), '*Introducation of Population Geography',* Kalyani Publishers, New Delhi, p.31.
8. Chandana. R. C. (1981), '*Introducation to Population Geography'*, Kalyani Publication New Delhi. P.126.
9. Franklin. S.H. (1956), '*The Pattern of sex Ratio in Newzeland'*, Economic Geography. Vol. 32. P. 168.
10. Gupta, B. & Bharati, S. K. (2024), 'Population Growth, Distribution and its Characteristics of Rewa City: An Analysis' Published in the Multidisciplinary Research Journal of *'NAMAN'* (ISSN: 2229-5585), Vol-31, July, 2024, pp-220-234, *(With GIF 3.125),* UGC CARE listed. Publisher: Shri Mohit Nigam Printek, Indian Press Colloney, Maldahiya, Varanasi.
11. Patel, S. S. & Bharati, S. K. (2023), 'Population Growth and its Characteristics of Banda City: A Geographical Study' Published in the '*Vidyawarta'* Interdisciplinary Multilingual Peer Reviewed Refereed International Research Journal, (ISSN 2394-5303), Vol. 01, Issue 103, July 2023, pp. 34-41, *(IIJIF, Impact Factor - 9.001).*
12. Ramchandran, R. (2012), '*Urbanization and Urban System in India'*, 14th ed., Oxford University Press, New Delhi.
13. Sharma, P.R. (1978), Spatio-Temporal Pattern of Population Growth and Distribution: A Regional Analysis, *The Deccan Geographer*, Vol. XVI, No. 1,

p. 372.

14. Shrychk. H.S. et. at. (1976), ‘*The Methods and Materials of Demography’,* Academic Press. New York, p. 105.
15. Triwartha, G.T. (1955), ‘A case of Population Geography’ *Annales of the Association of Geography,* Vol. 43.
16. Yadav, Shailesh Kumar and Bharati Sanjay Kumar (2024), An Analysis of Population Growth, Projection and its Characteristics of Jaunpur City, *Journal of Nehru Gram Bharati University (JNGBU), A peer reviewed Bi-Annual journal,* Prayagraj, UGC journal No- 64567, Year-2024, Volume-13, Issue-02, ISSN No- 2319-9997. page no- 51-72.
17. Zelinsky, W. (1954), ‘*A Prologueto Population Geography’*, Perentic Hall Enflewood cliff, New Jerssy.
18. गुप्ता, संजय एवं तिवारी, मीता रतावा (2022), जनपद देवरिया में जनसंख्या वृद्धि: एक भौगोलिक अध्ययन, *Pratibha, A peer reviewed (Refereed) journal, Research journal of humanities,* UGC Approved journal No- 47966, Year-14, Volume-4, Part- 57, October-December, 2022. ISSN- 0974-522X. page no- 53-63.
19. चान्दना, आर0 सी0 (2006), *’’जनसंख्या भूगोल’’*कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ0- 112.
20. ट्रिवार्था, जी0 टी0 (1969), ए ज्योग्राफी ऑफ पापुलेशनः वल्ड पैर्टन्स,जोन वैली एण्ड संस, न्यूयार्क।
21. तिवारी एस0, (2013), ’’जनपद इलाहाबाद (उ0 प्र0), जनसंख्या वृद्धि का भौगोलिक अध्ययन’’, राष्ट्रीय भौगोलिक पत्रिका, वाराणसी, वर्ष 4, अंक 1, जून, पृ0 103-112.
22. शंकर, रमा (2016), भूमि उपयोग एवं जनसंख्या अन्तर्सम्बन्धः जनपद इलाहाबाद (उ0प्र0) का एक भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.
23. सिहं, विनय प्रकाश एवं गायत्री राय (2012), ’’उत्तर प्रदेश में साक्षरता का स्थानिक प्रतिरूप’’ राष्ट्रीय भौगोलिक पत्रिका वर्ष 3, अंक 2, दिसम्बर 2012, पृ0 सं0-109.

Disclaimer/Publisher’s Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.